



**HINDI B – STANDARD LEVEL – PAPER 1**  
**HINDI B – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1**  
**HINDI B – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1**

Friday 21 May 2010 (afternoon)  
Vendredi 21 mai 2010 (après-midi)  
Viernes 21 de mayo de 2010 (tarde)

1 h 30 m

---

**TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES**

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for Paper 1.
- Answer the questions in the Question and Answer Booklet provided.

**LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS**

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'Épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

**CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS**

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la Prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

पाठांश क:

### पुष्कर-स्नान का लाभ और मेले का मज़ा

देश के हिंदू तीर्थस्थानों में पुष्कर का अलग ही महत्व है। यह महत्व इसलिए बढ़ जाता है कि यह अपने आप में दुनिया में अकेली जगह है जहां ब्रह्मा की पूजा की जाती है। लेकिन इस धार्मिक महत्व के अलावा भी इस जगह में लोगों को आकर्षित करने वाली खूबसूरती है। यह भी माना जाता है कि महाकवि कालिदास ने इसी स्थान को अपने महाकाव्य अभिज्ञान शाकुंतलम के रचनास्थल के रूप में चुना था। कार्तिक के महीने में यहां लगने वाला ऊंट मेला दुनिया में अपनी तरह का अनूठा तो है ही, साथ ही यह भारत के सबसे बड़े पशु मेलों में से भी एक है। मेले के समय पुष्कर में कई संस्कृतियों का मिलन सा देखने को मिलता है।

मेला रेत के विशाल मैदान में लगाया जाता है। आम मेलों की ही तरह ढेर सारी कतार की कतार दुकानें, खाने-पीने के स्टाल, सर्कस, झूले और न जाने क्या-क्या। ऊंट मेला और रेगिस्तान की नज़दीकी है इसलिए ऊंट तो हर तरफ देखने को मिलते ही हैं। लेकिन कालांतर में इसका स्वरूप एक विशाल पशु मेले का हो गया है, इसलिए लोग ऊंट के अलावा घोड़े, हाथी, और बाकी मवेशी भी बेचने के लिए आते हैं। सैलानियों को इनपर सवारी का लुत्फ़ मिलता है सो अलग। लोक संस्कृति व लोक संगीत का शानदार नज़ारा देखने को मिलता है।

कार्तिक में स्नान का महत्व हिंदू मान्यताओं में वैसे भी काफ़ी ज्यादा है। इसलिए यहां साधु भी बड़ी संख्या में नज़र आते हैं। पुष्कर मेला कार्तिक माह में शुक्ल पक्ष की अष्टमी से शुरू होता है और पूर्णिमा तक चलता है। मेले के शुरूआती दिन जहां पशुओं की खरीद-फ़रोख़्त का जोर रहता है, वहीं बाद के दिनों में पूर्णिमा के पास आते-आते धार्मिक गतिविधियों का जोर हो जाता है। मेले के दिनों में ऊंटों व घोड़ों की दौड़ खूब पसंद की जाती है। सबसे खूबसूरत ऊंट व ऊंटनियों को इनाम भी मिलते हैं। दिन में लोग जहां जानवरों के कारनामे देखते रहते हैं, तो वहीं शाम का समय राजस्थान के लोक नर्तकों व लोक संगीत का होता है। ऐसा समां बंधता है कि लोग झूमने लगते हैं।

पुष्कर को तीर्थनगरी का दर्जा हासिल है तो उसकी एक वजह यह भी है कि यहां कई मंदिर हैं। इसीलिए इसे मंदिरों की नगरी भी कहा जाता है। पुष्कर में छोटे-बड़े चार सौ से ज्यादा मंदिर हैं। ब्रह्मा के नाम मौजूद यह एकमात्र मंदिर है जिसे 14वीं सदी में बनाया गया था। रंगजी को विष्णु का ही रूप माना जाता है। इनके दो मंदिर हैं- एक नया और दूसरा पुराना। नया मंदिर हैदराबाद के सेठ पूरणमल गनेरीवाल ने 1823 में बनवाया था। इस मंदिर की खूबसूरती द्रविड, राजपूत व मुगल शैली के अद्भुत समागम की वजह से है। ब्रह्मा की पहली पत्नी का यह मंदिर ब्रह्मा मंदिर के पीछे एक पहाड़ी पर स्थित है। मंदिर तक पहुंचने के लिए कई सीढ़ियां चढ़नी होती हैं। मंदिर से नीचे पुष्कर सरोवर और आसपास के गांवों का मनमोहक नज़ारा देखने को मिलता है। इनके अलावा पुष्कर में बालाजी मंदिर, मन मंदिर, वराह मंदिर, आत्मेश्वर महादेव मंदिर आदि भी श्रद्धा के प्रमुख केंद्रों में से हैं।

पाठांश ख:

## एक दुकान जहां मिलती हैं चाय और कहानियां

नई दिल्ली। भारत के दिल यानी दिल्ली में चाय बेचना हुआ यह व्यक्ति किसी भी दूसरे चाय वाले की तरह ही नजर आएगा। पर कोई जरूरी नहीं कि जो दिखता है, वह वैसा ही हो। यह कहावत उन लक्ष्मण राव पर बिल्कुल सही बैठती है, जो अब तक कुल 18 किताबें लिख चुके हैं।

दिल्ली में आई.टी.ओ. के पास चाय की दुकान चलाने वाले 53 वर्षीय लक्ष्मण के पास 'भारतीय साहित्य कला प्रकाशन' नाम का खुद का प्रकाशन भी है। लक्ष्मण ने बताया कि मैं पिछले 28 या 29 सालों से लघु कहानियां, नाटक और उपन्यास लिख रहा हूं। उन्होंने बताया कि अपनी पहली किताब 'नई दुनिया की नई कहानी' में मैंने अपने जीवन के सारे संघर्षों और चुनौतियों का जिक्र किया है। यह किताब मैंने 1979 में लिखी थी।

महाराष्ट्र के अमरावती जिले में एक गरीब किसान परिवार में जन्मे लक्ष्मण को हिंदी साहित्य से विशेष लगाव रहा है। उन्होंने 1973 में मुंबई विश्वविद्यालय से हिंदी माध्यम में 10वीं की शिक्षा पूरी की। उन्हें गुलशन नंदा के उपन्यासों से विशेष लगाव रहा है।

लक्ष्मण ने कहा कि वह जीवन के शुरुआती दौर में लेखक बनना नहीं चाहते थे, पर एक घटना ने उन्हें ऐसा करने के लिए प्रेरित किया। एक छोटा बच्चा, जो नदी में नहाने गया था, डूब कर मर गया और इस घटना ने उन्हें इतना उद्वेलित किया कि अपनी भावनाओं को एक शकल देने के लिए उन्होंने किताबों का सहारा लिया। हालांकि घर के कमजोर आर्थिक हालात की वजह से उन्हें अपनी पढ़ाई दसवीं कक्षा के बाद छोड़नी पड़ी। आजीविका के लिए उन्होंने कुछ समय के लिए स्थानीय मिल और निर्माण स्थलों पर भी काम किया। पर फिर वह 1975 में दिल्ली आ गए। दिल्ली में दरियागंज इलाके में किताब बाजार को देखकर उनका शौक एक बार फिर जाग उठा। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से पत्राचार के माध्यम से स्नातक की डिग्री ली। अपनी जमा पूंजी से उन्होंने एक चाय की दुकान खोली और तब से वह किताबें लिखने में जुट गए। हालांकि उन्हें किसी प्रकाशक से कोई सहायता नहीं मिली। तब उन्होंने सोचा कि वह अपनी किताबों को खुद ही लिखेंगे, प्रकाशित करेंगे और बेचेंगे। लक्ष्मण गर्व से कहते हैं, मेरी कुछ किताबों को आप सार्वजनिक पुस्तकालयों और स्कूली पुस्तकालयों में देख सकते हैं।

पाठांश ग:

### पोर्ट ऑफ स्पेन के भारतवंशी

त्रिनिडाड की राजधानी पोर्ट ऑफ स्पेन भारतीय लोगों के यहाँ आकर बसने और रम जाने का गवाह है। मजदूरी करने के लिए यहाँ लाए गए भारतवासी अब यहाँ भारतवंशी कहलाते हैं। भारतीय लोगों के रहन-सहन, पर्व-त्यौहार मनाने के तौर-तरीके और सामाजिक जीवन के बारे में जानने के लिए मिलते हैं पोर्ट ऑफ स्पेन के नरवानी परिवार से।

- 5 परिवार की मालकिन गीता नरवानी अपने दो बेटों और बहू के साथ समुद्र तट से लगी एक खूबसूरत कॉलोनी में रहती हैं। मैं जब गीता नरवानी के घर पहुँचा, तो मुझे लगा जैसे मैं भारत के किसी कोने में हूँ और किसी धार्मिक परिवार के बीच बैठा हूँ। गीता नरवानी ने समय के साथ पोर्ट ऑफ स्पेन में आए बदलाव को करीब से महसूस किया है। दूर-दूर तक फैले पोर्ट ऑफ स्पेन में रहते हुए उन्हें भारत की कमी नहीं महसूस होती। उनके शब्दों में यह उन्हें 'छोटा इंडिया' लगता है। पोर्ट ऑफ स्पेन के सेंट जेम्स इलाके में भारत से मजदूरी के लिए लाए गए लोग ज्यादातर उत्तर भारत और उसमें भी बिहार और यूपी के ज्यादा थे। इसकी कुछ झलक यहाँ के लोगों की भाषा में आपको मिल ही जाती है।

- 10 गीता नरवानी बताती हैं कि यहाँ पर्व-त्यौहार खूब धूम-धाम से मनाते हैं और उनमें प्रमुख हैं फागवा। अब फागवा सुनकर आप चौंकिए मत। होली को यहाँ फागवा कहते हैं। दरअसल बिहार में होली को फगुआ भी कहा जाता है। बिहार से आए यहाँ के लोगों ने फगुआ की परंपरा बचाए रखी लेकिन समय के साथ-साथ फगुआ शब्द बिगड़ कर फागवा हो गया है और अब यहाँ होली फागवा के रूप में ही जानी जाती है। इसके अलावा दीपावली और कार्तिक नहान भी पोर्ट ऑफ स्पेन में बसे भारतीयों के बीच काफ़ी लोकप्रिय है। गीता नरवानी बताती हैं, "यहाँ दीपावली की इतनी धूम होती है कि एक महीने पहले से ही लोग मांस-मछली खाना छोड़ देते हैं।"

- 20 यहाँ के भारतवंशियों में शादी तीन दिनों तक चलती है। शादी के एक दिन पहले मटकोड़ यानी मिट्टी कोड़ने की रस्म। फिर शादी और शादी के एक दिन बाद भी समारोह का दिन होता है। गीता नरवानी के बड़े बेटे विनोद एक कम्युनिटी रेडियो से जुड़े हैं और भारतीय खाने के इतने शौकीन हैं कि पूछिए मत। बाज़ार में पनीर नहीं मिलता, लेकिन मम्मी से फ़रमाइश करके घर में पनीर बनवाते हैं क्योंकि उनके वेस्टइंडीज़ के सहकर्मियों को पनीर बहुत पसंद है। इस परिवार के साथ बातचीत के दौरान एक बात पता चल ही गई कि भारत से इतनी दूर ऐसे परिवार ही भारत को जिंदा रखे हुए हैं।

पाठांश घ:

## कैसे पाएं रोगों से छुटकारा

व्यस्त जीवन शैली और भौतिकता का असर लोगों की जीवनशैली, स्वास्थ्य और पारिवारिक मूल्यों पर नज़र आने लगा है। उद्योगों में काम करने वाले लोगों की लगभग आधी संख्या मोटापे और ज़्यादा वज़न की शिकार हैं तो करीब 27 प्रतिशत संख्या हाईपरटेंशन यानी उच्च रक्तचाप का सामना कर रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारत में कामकाजी लोगों की जीवनशैली और स्वास्थ्य के बारे में एक सर्वेक्षण कराया है जिसमें यह बात सामने आई है। इस सर्वेक्षण में कामकाज के स्थान से जुड़ी समस्याओं पर भी गौर किया गया है। इस सर्वेक्षण में पता चला है कि कामकाज करने वाले करीब 27 प्रतिशत लोग उच्च रक्तचाप से परेशान हैं। करीब दस प्रतिशत मधुमेह का सामना कर रहे हैं तो लगभग 47 प्रतिशत लोग ज़्यादा वज़न की परेशानी से दो-चार हैं। इस सर्वेक्षण में कहा गया है कि ये समस्याएँ मुख्य रूप से उन उद्योगों में जो शहरी इलाकों में हैं और जहाँ जीवनशैली का गहरे रूप से शहरीकरण हो चुका है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के इस सर्वेक्षण में सिफ़ारिश की गई है कि कामकाजी लोगों को दिल की बीमारियों से बचने के बारे में स्वास्थ्य प्रशिक्षण दिया जाए और यह आकलन भी किया जाए कि स्वास्थ्य शिक्षा का इन बीमारियों को नियंत्रित करने में कितना योगदान रहता है। इस सर्वेक्षण में भारत के दस विभिन्न उद्योगों में काम करने वाले लगभग 35 हज़ार कर्मचारियों और उनके परिजनों से बातचीत की गई।

इस कार्यक्रम में खास ज़ोर इस बात पर दिया गया है कि कामकाज के स्थानों पर रोज़मर्रा की ऐसी आदतों और बर्ताव में बदलाव लाना ज़रूरी है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं। इसके उलट स्वास्थ्यवर्धक आदतें और बर्ताव को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, खासतौर से हृदय संबंधी बीमारियों का सामना करने के प्रयासों के तहत। इस कार्यक्रम में कहा गया है कि लोगों को अपनी शारीरिक गतिविधियाँ बढ़ानी चाहिए यानी व्यायाम और कसरत को जीवनशैली का नियमित हिस्सा बनाएँ, फल और सब्जियाँ ज़्यादा खाएँ। इस सर्वेक्षण में मधुमेह, लंबाई और वज़न का तालमेल और हृदय को स्वस्थ रखने पर भी ध्यान दिया गया है। इस कार्यक्रम में कहा गया है कि लोगों को जागरूक बनाने के लिए आकर्षक और प्रभावशाली संदेश प्रसारित करें और स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने के तमाम प्रयास करें। इसके तहत नियमित तौर पर स्वास्थ्य कक्षाएँ लगेँ, फ़िल्में दिखाई जाएँ, सेमिनार हों, लोगों को आपस में बहस-मुबाहिसा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। इस कार्यक्रम के तहत अनेक देशों में ये तरीक़े अपनाए भी गए जिनका लोगों के स्वास्थ्य पर सकारात्मक असर देखा गया।